ऋषिपञ्चमीव्रत कथा

भाषा टीका सहित

प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड,

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

१, त्रिलोकनाथरोड, लखनऊ—१

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा

तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ में मुद्रित

द्वितीय बार २०००] सन् १९९५ [

T.K.B.D.
Lko.
Rs. 5/=

* अथ *

ऋषिपञ्चमीव्रतकथा सटीक

मुद्रक

तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लिमिटेड

प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड

पोस्ट बाक्स नं० ८५, लखनऊ

उत्तराधिकारी

नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

सन् १९९५ ई०

अथ ऋषिपञ्चमीव्रत की सामग्री

—:०:—

१ कदलीस्तम्भ
२ आम्रपल्लव तोरण
३ पंचपल्लव
४ कलश
५ यज्ञोपवीत
६ वस्त्रोपवस्त्र
७ सिंदूर
८ नीवार-तंदुल
९ चंदन
१० धूप
११ दीप
१२ पुष्प
१३ कपूर
१४ कुशा
१५ नारिकेलफल
१६ ताम्बूलदल
१७ पुंगीफल
१८ ऋतु-फल
१९ पुष्प-माला
२० बीजपूर (नींबू)
२१ दक्षिणा द्रव्य
२२ नैवेद्य
२३ गोदुग्ध
२४ गोदधि
२५ गोघृत
२६ शर्करा
२७ गङ्गाजल
२८ मधु

अथ ऋषिपञ्चमीव्रतकथा

श्रीगणेशाय नमः ॥ ऋषिपञ्चमीव्रत की विधि—यह मध्याह्न-व्यापिनी करणीय है क्योंकि "हारीत ऋषि" ने कहा है कि सम्पूर्ण पूजा और व्रतों में मध्याह्नव्यापिनी तिथि लेना चाहिए और दो दिन मध्याह्नव्यापिनी हो तो पूर्वदिन व्रत करे। "मदन-रत्न" में लिखा है कि भादों महीने की शुक्लपञ्चमी में ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा नदी आदि में स्नान करके नैमित्तिक कर्म करके घर को जाय। गोबर से लिपी चित्रविचित्र शुक्ल पुष्पोपशोभित उत्तम वेदी बनावे। उस वेदी में अरुन्धती सहित दिव्य सप्तऋषियों की गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, अर्घ्य और फलों से संकल्प पूर्वक पूजा करे। (अथ पूजाविधिः) "आगच्छन्तु महाभागाश्चतुर्वेदस्वरूपिणः। यावद् व्रतमहं कुर्वे कृपया भवताम्प्रभो" इस मंत्र से आवाहन करे "मूर्त्तिब्रह्मण्यदेवस्य ब्रह्मणस्तेज उत्तमम्। सूर्य कोटिप्रतीकाशमृषिवृन्दं विचिन्तयेत्" इस मंत्र से ध्यान करे "ऋग्यजुस्सामवेदानां स्वरूपेभ्यो नमोनमः। पुराणपुरुषेभ्यो हि देवर्षिभ्यो नमोनमः" इस मंत्र से आसन दे "गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तम्पाद्यं गृह्णंतु भो द्विजाः। प्रसादं कुरुते प्रीतास्तुष्टास्सन्तु सदा मम" इस मंत्र से पाद्य दे "नभस्यशुक्लपञ्चम्यामर्चिता ऋषिसत्तमाः। दहन्तु पापं मे सर्वं अर्घ्यं गृह्णंतु वै नमः" इस मंत्र से अर्घ्य दे "लोकानां तुष्टिकर्त्तारो यूयं सर्वे तपोधनाः। नमो वो धर्मविज्ञेभ्यो महर्षिभ्यो नमोनमः" इस मंत्र से आचमन करावे "मंदाकिनी

गौमती च यमुना च सरस्वती। कृष्णा च नर्मदा तापी ताभ्यस्स्नानीयमाहृतम्" इस मंत्र से स्नानं करावे "सर्वे नित्यं तपोनिष्ठा ब्रह्मज्ञास्सत्यवादिनः। वस्त्राणि प्रतिगृह्णन्तु भक्तिदास्सन्तु मे सदा" इस मंत्र से वस्त्र चढ़ावे "नानावस्त्रैस्समुद्भूतंनिर्वर्त्य ब्रह्मसूत्रकम्। प्रत्येकं च प्रयच्छामि ऋषयः प्रतिगृह्यताम्" इस मंत्र से यज्ञोपवीत और चन्दन चढ़ावे "रञ्जिताः कुसुमौघेन अक्षतास्तु सुशोभनाः। गृह्णन्तु मम संतुष्टाः प्रसन्ना ऋषिसत्तमाः" इस मंत्र से अक्षत चढ़ावे "मल्लिकाचम्पकादीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थम्प्रतिगृह्यताम्" इस मंत्र से पुष्प चढ़ावे "वनस्पतिरसो धूपो गन्धाढ्यस्सुमनोहरः। आघ्रेयस्सर्वभूतानां धूपोऽयम्प्रतिगृह्यताम्" इस मंत्र से धूप दे "साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितम्मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्" इस मंत्र से दीप दे "नानापक्वान्नसंयुक्तं रसैः षड्भिस्समन्वितम्। नैवेद्यमृषयस्सर्वे गृह्णंतु वसुदायकाः" इस मंत्र से नैवेद्य चढ़ावे "लोकानां०" इस मंत्र से आचमन और चन्दन से करोद्वर्त्तन दे "पूगीफलम्महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरादिसमायुक्तं ताम्बूलम्प्रतिगृह्यताम्" इस मंत्र से ताम्बूल चढ़ावे "इदम्फलम्०" इस मंत्र से फल चढ़ावे "हिरण्यगर्भगर्भस्थं०" इस मंत्र से दक्षिणा चढ़ावे "यानिकानि०" इस मंत्र से प्रदक्षिणा करे "वायनं फलसंयुक्तं सघृतं दक्षिणान्वितम्। द्विजवर्याय दास्यामि व्रतसम्पूर्तिहेतवे॥ भवन्तः प्रतिगृह्णन्तु ज्योतीरूपास्तपोधनाः" इस मंत्र से बायन दे "कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः। जमदग्निर्वशिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः॥ गृह्णन्त्वर्घ्यं मया दत्तं तुष्टाः संतु च मे सदा" इस मंत्र से अर्घ्य दे। "न्यूनातिरिक्तकर्माणि मया यानि कृतानि च। क्षमध्वं तानि

सर्वाणि यूयं सर्वे तपोधनाः" इस मंत्र से विसर्जन करे ॥ इति पूजाविधिः ॥ इस प्रकार ऋषियों की पूजा और ध्यान करके विना जुती पृथ्वी से उत्पन्न शाक आदि का आहार करके ऋषियों का ध्यान करे और समाहित चित्त हो ब्रह्मचर्य से शयन करे। इस विधि से सात वर्ष तक व्रत करे और आदि, मध्य अथवा अंत में उद्यापन करे। वेदवेदांगपारग सात आचार्यों को वरण करके शक्तिपूर्वक सुवर्ण की जटिल, अक्षमाला, सूत्र, कमण्डलु सहित सात मूर्तियाँ बनवाके मिट्टी के छिद्र रहित कलश के ऊपर स्थापित करके पञ्चामृत से यथाविधि भक्तिपूर्वक उसको स्नान करावे। इस प्रकार पूजा करके अर्घ्य दे और तिल, व्रीहि, यव से होम करे "सहस्तोमा०" इस मंत्र या नाम मंत्रों से पृथक् होम करे और वस्त्रालङ्कार संयुक्त सात गोदान करे और वस्त्रालङ्कार आदि से आचार्यों की पूजा करे तथा अपने गुरु की आज्ञा से ब्राह्मणों को दान देकर प्रीति भाव से यथाविधि भोजन करावे। इस विधि से इस व्रत को अच्छे प्रकार करे तो सम्पूर्ण व्रत, तीर्थ और सम्पूर्ण दान से जो पुण्य प्राप्त होता है वह केवल इस व्रत के करने से मिलता है ॥

इति व्रतविधिः ॥

———

अथ कथा प्रारम्भः ।

अथ कथा ॥ हेमाद्रौ ब्रह्माण्डे शिताश्व उवाच ॥ श्रुतानि देवदेवेश व्रतानि सुबहूनि च ॥ साम्प्रतम्मे समाचक्ष्व व्रतम्पाप प्रणाशनम् १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ ऋषिपञ्चमीति विख्यातं सर्वपापहरंपरम् २ येन चीर्णेन राजेन्द्र नरकंनैवपश्यति ॥ अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ३ वैदिशेभूद्द्विजवर उत्तङ्कोनामनामतः ॥ तस्य भार्या सुशीलेति पतिव्रतपरायणा ४ तस्या अपत्ययुगलं पुत्रोहि सुविभीषणः ॥ अधीतवान्सुतस्तस्य वेदान्साङ्गपदक्रमान् ५ समानेन कुलीनेन सुता चापि विवाहिता ॥ विवाहितैव सा दैवाद्वैधव्यं

श्रीगणेशाय नमः ॥ ब्रह्माजी से राजा शिताश्व कहते हैं कि हे देवदेवेश ! बहुत व्रत हमने सुना अब आप हमसे पापनाशन व्रत कहिये १ ब्रह्माजी कहते हैं कि हे राजन् ! व्रतों में उत्तम सर्वपापहर ऋषिपञ्चमी नाम व्रत कहते हैं सुनो २ हे राजेंद्र ! जिस व्रत के करने से फिर नरक को नहीं देखता इसी पर एक पुराना इतिहास कहते हैं ३ वैदिश देश में एक उत्तङ्क नाम ब्राह्मण था और उसकी पतिव्रतपरायणा सुशीला नाम स्त्री थी ४ उसके दो पुत्र थे उनमें से सुविभीषण नाम पुत्र ने अङ्ग, पद, क्रम सहित वेद को पढ़ा ५ तत्पश्चात् समान कुलीन ब्राह्मण की कन्या के साथ

प्राप्यसत्तमा ६ सतीत्वंपालयन्ती सा आस्ते निज पितृगृहे ॥ तस्या दुःखेन सन्तप्तःसुतं संस्थाप्य वेश्मनि ७ गङ्गा तीरे वनम्प्राप्तः सकलत्रस्तया सह ॥ स तत्राध्यापयामास शिष्यान्वेदंद्विजोत्तमः ८ सुता च कुरुते तस्य पितुश्शुश्रूषणंपरम् ॥ पितुश्शुश्रूषणं कृत्वा परिश्रान्ता कदाचन ९ निशीथे किल संसुप्ता कृमि-राशिरजायत ॥ ते तां तथा विधां दृष्ट्वा विवस्त्रां प्रस्तर-स्थिताम् १० शिष्या निवेदयामासुस्तन्मातुः करुणा-स्थिताम् ॥ न जानीमो वयं किंचिद्देवि साध्वी तथा विधा ११ कृमिराशिमयी जाता मातस्सम्प्रति दृश्यते ॥ वज्रपातनिभंवाक्यं श्रुत्वा शिष्यैरुदीरितम् १२ संभ्रान्त-

विवाह किया और विवाह होते ही उसकी कन्या विधवा हो गई ६ वह कन्या सतीत्व को पालती हुई अपने पिता के गृह में रहती थी उस कन्या के दुःख से दुःखित अपने गृह में पुत्र को रखकर ७ कन्या और अपनी स्त्री सहित गङ्गा तीर के वन को प्राप्त हो शिष्यों को वेद पढ़ाने लगा ८ और ब्राह्मण की कन्या भी अपने माता पिता की सेवा करती हुई एक दिन सेवा से परिश्रांत ९ अर्द्ध-रात्र में सोई हुई कृमिराशि होगई वे सब पत्थर पर स्थित विवस्त्रा उस कन्या को देख १० सम्पूर्ण शिष्य लोग उसकी माता से कहते भये कि हम नहीं जानते वह इस प्रकार हो गई ११ इस समय वह कृमिराशि हुई हमें देख पड़ती है। वज्रपात के समान शिष्यों के वचन को सुनके १२ भ्रम को प्राप्त हो, कन्या के निकट गई

मनसा शीघ्रं तत्समीपमुपागता ॥ सतां तथा विधां दृष्ट्वा विललापातिदुःखिता १३ उरश्चताडयामास सुतराम्मोहमाप च ॥ क्षणेन प्राप्तचैतन्यमुत्थाप्य प्रतिसृज्य च १४ समालभ्य च बाहुभ्यांनिन्ये तत्पितुरंतिकम् ॥ स्वामिन्कथय मे साध्वी केन दुष्कृतकर्मणा १५ निशीथे सम्प्रसुप्तेयं जायते कृमिसंकुला ॥ एतच्छ्रुत्वा ततो वाक्यमृषिर्ध्यान परायणः १६ ज्ञात्वा निवेदयामास तस्याः प्राग्जन्मचेष्टितम् १७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ प्रागियं सप्तमेऽतीते जन्मनि ब्राह्मणी ह्यभूत् ॥ नोत्ससार स्वभाण्डेभ्यस्सञ्जाता च रजस्वला १८ अस्यास्तु पाप्मना तेन जायते कृमिवद्वपुः॥

और उसको वैसी देख दुःखित हो रोने लगी १३ और छाती पीट के बारबार मोह को प्राप्त हुई। क्षणमात्र में चैतन्य को प्राप्त हो कन्या को उठा के साफ किया १४ हाथ से पकड़ के उसको उसके पिता के निकट ले गई और कहती भई कि हे स्वामिन्! यह साध्वी कन्या किस कर्म से १५ अर्द्धरात्र में सोती हुई कृमियों करके व्याप्त हुई यह सुनकर ऋषि ध्यानपरायण हुए १६ और उसके पूर्वजन्म के वृत्तांत को जानके कहते भए १७ ऋषिजी कहते हैं कि पहिले सातवें जन्म में यह ब्राह्मणी थी और रजस्वला हो अपने पात्रों के स्पर्श का त्याग नहीं किया १८ इसी पाप से इसका शरीर कृमि से युक्त हुआ और रजस्वला के पाप से

रजस्वलायाः पापेन युक्ता भवति सानघे १९ प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ग्रामशूकरी ॥ तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुद्ध्यति २० तथा तया सखीसङ्गाद्व्रतं दृष्ट्वावभाषितम् ॥ दृष्टव्रतप्रभावेण जाता द्विजकुलेऽमले २१ अपमानाद्व्रतस्यास्य कृमिराशिमयी ह्यभूत ॥ एतत्ते कथितं सर्वं कारणं दुष्कृतस्य च २२॥ सुशीलोवाच ॥ दर्शनादपि यस्य स्याद्विप्राणां निर्मले कुले ॥ जन्म युष्मद्विधानां हि जायते ब्रह्मतेजसाम् २३॥ अवज्ञायाः प्रजायन्ते विग्रहे कृमिराशयः॥ महाश्चर्यकरं नाथ तद्व्रतं कथयस्व मे २४॥ ऋषिरुवाच ॥ सुशीले शृणु तत्सम्यग्व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥

युक्त हुई १९ रजस्वला होने में पहिले दिन स्त्री चाण्डाली, दूसरे दिन ग्रामशूकरी, तीसरे दिन धोबिन और चौथे दिन शुद्ध होती है २० उसी प्रकार सखीसंग से व्रत को देखके अपमान किया और दृष्टव्रत के प्रभाव से ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न हुई २१ और व्रत के अपमान करने से कृमिराशिमयी हुई इसके सम्पूर्ण पाप का कारण हमने तुमसे कहा २२ सुशीला कहती है कि जिस व्रत के दर्शन से आप ऐसे ब्राह्मण के निर्मल कुल में जन्म हुआ २३ और जिसके अपमान से कृमि की राशि हुई ऐसे महाश्चर्यकर व्रत को हमसे कहिये २४ ऋषि महाराज कहते हैं कि हे सुशीले! वह व्रतों में उत्तम व्रत सुनो कि जिसके भली भाँति करने से इस

येन चीर्णेन सहसा पापादस्मात्प्रमुच्यते २५ दुःख-त्रयाभिघातश्च जायते नात्र संशयः ॥ कल्याणानि विवर्द्धन्ते सम्पदश्च निरापदः २६ नभस्यशुक्लपक्षे तु यदा भवति पञ्चमी ॥ नद्यादिषु तदा स्नानं कृत्वा नियममेव च २७ विधाय नित्यकर्माणि गत्वा द्वारवती मृषीन्॥ स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या पञ्चामृतरसैः शुभैः २८ चन्दनागुरुकर्पूरैर्विलिप्य च सुगन्धिभिः॥ पूजयेद्विविधैः पुष्पैर्गन्धधूपादिदीपकैः २९ समाच्छाद्य शुभैर्वस्त्रैस्सोपवीतैर्यथाविधि ॥ ततोनैवेद्यसम्पन्नमर्घ्यं दद्याच्छुभैः फलैः ३० (अर्घ्यमंत्रः प्रागुक्तएव) श्रोतव्यमिदमाख्यानं शाकाहारंप्रकल्पयेत् ॥ स्थातव्यं ब्रह्मचर्येण

पाप से छूट जावे २५ जिसके करने से तीन अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक दुःख का नाश हो, कल्याण और सम्पत्ति बढ़े २६ भादों के शुक्लपक्ष में जब पञ्चमी हो तब नदी आदि में स्नान करके नियम करे २७ नित्य कर्म करके द्वारवती को जाके भक्तिपूर्वक शुभ पंचामृत रस से स्नान करावे २८ और चन्दन, अगुरु, कपूर आदि सुगंधियों से लेप करके विविध प्रकार के पुष्प, गंध, धूप, दीप से पूजा करे २९ जनेऊ सहित सुंदर कपड़ों से ढँककर उत्तम फल और नैवेद्य से पूर्ण अर्घ्य देय ३० पहिले कहे हुए मंत्रों से अर्घ्य देय इस कथा को सुनके शाक का आहार करे

ऋषिध्यानपरायणः ३१ अनेन विधिना सम्यग्व्रत-
मेतत्समाचरेत् ॥ तस्य यज्जायते पुण्यं तच्छृणुष्व
समाहितः ३२ सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ॥
सर्वदानेषु दत्तेषु तदस्य व्रतपारणात् ३३ कुरुते या
व्रतञ्चैतत्सा नारी सुखभागिनी ॥ रूपलावण्यसंयुक्ता
पुत्रपौत्रादिसंयुता ३४ इहलोके सदैव स्यात् परत्राप्य-
क्षया गतिः ॥ व्रतस्यास्य प्रभावेण जातिं स्मरति
पौर्वकीम् ३५ ॥ इतिहेमाद्रौ ब्रह्माण्डे ऋषिपञ्चमी-
व्रतम् ॥

और ऋषि ध्यानपरायण हो ब्रह्मचर्य से रहे ३१ इस विधि से भलीभाँति व्रत करे और इस व्रत के करने से जो पुण्य होता है उसको समाहित हो सुनो ३२ संपूर्ण व्रत और संपूर्ण तीर्थ में और सर्वदान से जो फल होता है वह इसके पारण से प्राप्त होता है ३३ जो कोई सुखभागिनी स्त्री इस व्रत को करती है वह रूप, शोभा, पुत्र और पौत्र से युक्त होती है ३४ इस लोक में सुख भोग के परलोक में अक्षयगति को प्राप्त हो और इस व्रत के प्रभाव से पूर्व जाति को स्मरण करनेवाली होती है ३५ ॥ इति हेमाद्रौ ब्रह्माण्डे ऋषिपञ्चमीव्रतकथा समाप्ता ॥ ❀ ॥

———

अथ कथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ श्रुतानि देवदेवेश व्रतानि सुबहूनि च ॥ साम्प्रतम्मेऽन्यदाचक्ष्व व्रतं पाप-प्रणाशनम् १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अथान्यदपिराजेन्द्र पञ्चमी ऋषिसंज्ञिता ॥ कथयिष्यामि यत्कृत्वा नारी पापात्प्रमुच्यते २ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कीदृशी पञ्चमी कृष्ण कथं च ऋषिसंज्ञिता ॥ पातकान्मुच्यते कस्मा-न्नारी यदुकुलोद्भव ३ पापानि च बहून्यत्र विद्यन्ते किल केशव ४ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि या स्त्री जाता रजस्वला ॥ दुष्टास्पृशति भाण्डानि गृहकर्मणि संस्थिता ५ प्राप्नोति सा महापापं सर्वनारी

(अथ कथा) राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे देवेश! हमने बहुत व्रत सुने अब हमसे पाप प्रणाशन दूसरा व्रत कहिये १ श्रीकृष्णजी कहते हैं कि अब और दूसरा ऋषिपञ्चमीव्रत कहते हैं जिसके करने से स्त्री सम्पूर्ण पापों से छूट जाती है २ राजा युधिष्ठिरजी कहते हैं कि हे कृष्ण! पञ्चमी कैसी है और किस प्रकार ऋषिपञ्चमी हुई और किस प्रकार के पापों से स्त्री छूट जाती है ३ हे केशव! इस संसार में बहुत प्रकार के पाप हैं ४ श्रीकृष्णजी कहते हैं कि अज्ञान अथवा ज्ञान से जो स्त्री रजस्वला हो गृहकर्म में स्थित हो पात्रों को स्पर्श करती है ५ रजस्वला स्त्री महा पाप को प्राप्त होती है और जिससे रजस्वला स्त्री वर्जनीय है उसका कारण कहते

रजस्वला ॥ शृणुष्व कारणं यस्माद्वर्ज्जनीया रजस्वला ६ प्रोत्सार्य गृहतश्चापि चातुर्वर्ण्येन भारत ॥ ब्रह्महत्यां पुरा शक्रो वृत्रं हत्वा समाप्तवान् ७ तया वै राजशार्दूल व्रीडितो वृत्रसूदनः ॥ ब्रह्माणं समुपागच्छदात्मन-श्शुद्धिकारणात् ८ शुद्धिं शक्रस्य राजेन्द्र प्रहृष्टेनान्त-रात्मना ॥ विभज्य ब्रह्महत्यांतु चतुर्द्धा तु चतुर्मुखः ९ प्राक्षिपद्राजशार्दूल चतुःस्थानेषु वै तदा ॥ वह्नौ प्रथम-जातासु ज्वालासु च नदीषु च १० पर्वतेषु च राजेन्द्र नारीरजसि पार्थिव ॥ अतो रजस्वला नारी प्रोत्सार्या च प्रयत्नतः ११ ब्रह्मणश्शासनात्पार्थ चातुर्वर्ण्येन सर्वदा ॥ प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी १२ तृतीये

हैं सुनो ६ चारों वर्णों को चाहिये कि रजस्वला स्त्री को अलग रक्खें क्योंकि पूर्व ही वृत्रासुर को इन्द्रजी मारकर ब्रह्महत्या को प्राप्त हुये ७ उस ब्रह्महत्या से लज्जित हो इन्द्रजी अपनी शुद्धि के लिये ब्रह्माजी के शरण को प्राप्त हुये ८ हे युधिष्ठिर ! प्रसन्नमन हो ब्रह्माजी इन्द्र की शुद्धि को विचारकर ब्रह्महत्या के चार भाग करके ९ उसी समय चार स्थानों में फेंक दिया, प्रथम तो अग्नि की पहिली ज्वाला में और नदी में १० पर्वत और स्त्री के रज में ब्रह्महत्या का विभाग किया इसीसे रजस्वला स्त्री को यत्नपूर्वक अन्यत्र रक्खे ११ ब्रह्माजी की आज्ञा से चारों वर्ण करके सर्वदा त्याज्य है पहिले दिन चाण्डाली, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी १२

रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुद्धयति ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि जातं संसर्गपातकम् १३ तत्पापसंक्षयार्थं हि कार्येय-मृषिपञ्चमी ॥ सर्वपापप्रशमनी सर्वोपद्रवनाशिनी १४ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रैः स्त्रीभिः कार्या विशेषतः १५॥ श्री-कृष्ण उवाच ॥ अथान्यदपि राजेन्द्र प्रवक्ष्यामि कथान-कम् ॥ पुरा कृतयुगे राजन् विदर्भायां बभूव ह १६ श्येनजिन्नामराजर्षिश्चातुर्वर्ण्यानुपालकः ॥ तस्य देशेव-सद्विप्रो वेदवेदाङ्गपारगः १७ सुमित्रो नाम राजेन्द्र सर्वभूतहिते रतः ॥ कृषीवृत्त्या समासीनः कुटुम्ब-परिपालकः १८ तस्य भार्या सुसाध्वी च पतिशुश्रूषणे रता ॥ जयश्रीर्नाम विख्याता बहुभृत्यसुहृज्जना १९

तीसरे दिन धोबिन, चौथे दिन शुद्ध होती है ज्ञान अथवा अज्ञान से संसर्ग पाप होता है १३ रजस्वला स्त्री के संसर्गज पापों के निवृत्त्यर्थ सर्व पापप्रशमनी और सर्वोपद्रवनाशिनी ऋषिपञ्चमी करणीय है १४ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र स्त्री करके यह व्रत सर्वथा करणीय है १५ श्रीकृष्णजी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! अब और दूसरी कथा कहते हैं कि पूर्व ही सत्ययुग में विदर्भापुरी बिषे १६ चारों वर्ण का पालक श्येनजित् नाम राजर्षि था उसी के देश में वेदवेदाङ्ग पारग एक ब्राह्मण रहता था १७ हे राजेन्द्र! वह सुमित्रनाम ब्राह्मण सर्व हितरत खेती की वृत्ति में टिका हुआ परिवार का पालन करता था १८ उस ब्राह्मण की साध्वी पतिसेवा में रत बहुत भृत्युसुहृज्जना जयश्रीनाम स्त्री थी १९ खेती आदि

क्षेत्रादिषु रता साध्वी व्याकुलीकृतमानसा ॥ एकदा सात्मनः प्राप्तमृतुकालं व्यलोकयत् २० रजस्वलापि सा राजन् गृहकर्म चकार ह ॥ भाण्डानि सास्पृशद्रा-जन्नृतौ प्राप्तेऽपि भामिनी २१ कालेन बहुना साध्वी पञ्चत्वमगमत्तदा ॥ तस्या भर्त्तापि विप्रोऽसौ कालधर्म-मुपेयिवान् २२ एवं तौ दम्पती राजन् स्वकर्मवशगौ तदा ॥ भार्या तस्य जयश्रीः सा साक्षात्संपर्कदोषतः २३ शुनीयोनिमनुप्राप्ता सुमित्रोऽपि नरेश्वर ॥ तस्यास्स-म्पर्कदोषेण बलीबर्दो बभूव ह २४ तद्दोषेण महाराज दुर्गतिं तौ गतौ तदा ॥ सुमित्रस्य च पुत्रोऽभूत्पितृ-शुश्रूषणे रतः २५ सुमतिर्नाम धर्मज्ञो देवतातिथिपूजकः॥

के काम में रत होने से व्याकुल मनवाली साध्वी ने एक समय ऋतुकाल को आया हुआ देखा २० रजस्वला होने पर भी वह गृहकर्म करती हुई ऋतुकाल में भी पात्र आदि का स्पर्श किया २१ बहुतकाल के पीछे जब वह मरगई और उसका स्वामी भी कुछ दिन के पश्चात् मृतक हुआ २२ इस प्रकार हे राजन् ! वह दोनों स्वकर्मवश हुये और उसकी जयश्री नाम स्त्री सम्पर्कदोष से २३ शुनीयोनि को प्राप्त हुई और हे राजन् ! उसका सुमित्र-नाम पति स्त्री के सम्पर्कदोष से बलीबर्द हुआ २४ उसी दोष से वह दोनों स्त्री पुरुष दुर्गति को प्राप्त हुये और सुमित्र का पुत्र पिता की सेवा में रत हुआ २५ वह ब्राह्मण का सुमतिनाम पुत्र

तस्य तौ पितरौ पार्थ ऋतुसंपर्कदोषतः २६ तिर्यग्यो-
निमनुप्राप्तावुभौ जातिस्मरौ नृप ॥ उच्छिष्टभोजिनी
साभूत्स्मरन्ती पूर्वपातकम् २७ सुमित्रोऽपि पिता
तस्य बलीबर्दो बभूव ह ॥ अथ क्षयाहे संप्राप्ते पितृ-
शुश्रूषणे रतः २८ भार्य्यां चन्द्रवतीप्राह सुमतिः
श्रद्धयान्वितः ॥ अद्य संवत्सरदिनं पितुर्मे चारुहासिनि
२९ भोजनीया मया विप्राः पाकशुद्धिर्विधीयताम् ॥
तथा कृता पाकशुद्धिस्सुमतेर्भर्तुराज्ञया ३० मुक्तं
पायसभाण्डेऽस्यास्सर्पेण गरलं ततः ॥ दृष्ट्वा ब्रह्म-
वधाद्भीता शुनी भाण्डानि सास्पृशत् ३१ द्विज-

धर्मज्ञ देवतातिथिपूजक हुआ उसके माता पिता ऋतु के सम्पर्क-दोष से २६ हे राजन्! तिर्य्यग्योनि को प्राप्त दोनों जातिस्मर हुये ब्राह्मण की स्त्री पूर्व्वपातक का स्मरण करती हुई उच्छिष्ट भोजिनी हुई २७ उस ब्राह्मण का सुमित्रनाम पिता बलीबर्द हुआ पिता की सेवा में रत क्षयाह के दिन २८ अपनी चन्द्रवती नाम भार्य्या से श्रद्धापूर्वक बोला कि हे चारुहासिनि! आज हमारे पिता का वार्षिक दिन है २९ इस कारण आज ब्राह्मणों को भोजन कराने के लिए पाक शुद्ध करो यह सुनकर अपने पति की आज्ञा से उसी प्रकार किया ३० तो उसके दुग्धपात्र में सर्प ने विष को छोड़ा यह देखकर ब्राह्मणों के वध से डरी हुई उसकी माता ने जो उसी के गृह में शुनी हुई थी उस दुग्ध के पात्र को मुख से स्पर्श कर लिया ३१ उस ब्राह्मण को स्त्री ने उस पात्र को स्पर्श करती

भार्य्या च तां दृष्ट्वा उलूकेन जघान ताम् ॥ भोजिता ब्राह्मणास्तत्र श्राद्धं कृत्वा प्रयत्नतः ३२ ततोभक्तेषु-विप्रेषु नोच्छिष्टं तु ददौ बहिः ॥ द्वारस्थायायदाशुन्या उपवासस्तदाभवत् ३३ ततो रात्र्यां प्रवृत्तायां सा शुनी क्षुधिता नृप ॥ बलीबर्दमुपागत्य भर्त्तारमिदम-ब्रवीत् ३४ बुभुक्षिताद्य नाथाहं न दत्तं भोजनं तु मे ॥ ग्रासादिकं च नो लेभे क्षुधा मां बाधते बलात् ३५ अन्यस्मिन्दिवसे पुत्रो मम लेह्यं ददात्यसौ ॥ अद्य मह्यं किमप्येषु उच्छिष्टमपि नो ददौ ३६ पायसान्ने पपाताद्य गरलं सर्पसम्भवम् ॥ मया विचिन्त्य मनसा मरिष्यन्ति द्विजोत्तमाः ३७ संस्पृष्टं पायसं रोषाद् बद्ध्वाहं ताडिता

हुई शुनी को लुकाठ से मारा और यत्नपूर्वक श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन कराया ३२ जब सब ब्राह्मण भोजन कर चुके और बाहर जूंठा भी न दिया इससे द्वार पर रहनेवाली शुनी को उपवास होगया ३३ तत्पश्चात् कुछ रात्रि बीते भूंखी हुई वह शुनी बलीवर्दरूप अपने भर्ता के निकट जाके कहती भई ३४ कि हे नाथ ! मैं इस समय बहुत भूंखी हूँ हमको किसी ने एक ग्रास भी भोजन न दिया इससे क्षुधा मुझको दुःख देती है ३५ और कहा कि प्रतिदिन तो मेरा पुत्र मुझको उत्तम भोजन देता था और आज जूंठा भी नहीं दिया ३६ पायसान्न में सर्प का विष गिरा था इससे मैंने विचारा कि जो ब्राह्मण इसे खायँगे वे मर जायँगे ३७ इससे मैंने पायस को जूंठा कर दिया उसने मुझे बाँध

भृशम् ॥ दुःखितं तेन गात्रं मे कटिभग्ना करोमि किम् ३८ ततः प्राह स वै भर्त्ता भद्रे ते पायसग्रहात् ॥ किं करोमि ह्यशक्तस्तु भारवाहत्वमागतः ३९ अद्याहमात्मजक्षेत्रे वाहितस्सकलं दिनम् ॥ मारितश्चात्मजेनाहं मुखबद्ध्वा बुभुक्षितः ४० वृथा श्राद्धं कृतं तेन जाताद्य मम कष्टता ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ तयोस्संवदतोरेवं मातापित्रोश्च भारत ॥ श्रुत्वा पुत्रस्तदा वाक्यं यदुक्तं च तदोभयोः ४१ ततो रजन्यां तत्कालं ददौ तस्यैव भोजनम् ॥ पितरौ तौ विदित्वा तु दत्तवान्सुमतिस्तदा ४२ तदासौ दुःखितः पुत्रो ज्ञात्वावस्थां तदा तयोः ॥ मातापित्रोस्तु राजेन्द्र तदासौ प्रस्थितो वनम् ४३ ज्ञातु-

के बहुत मारा उसी से मेरा शरीर अतीव दुःखित है और कमर टूट गई अब मैं क्या करूँ ३८ तत्पश्चात् उसके स्वामी ने कहा कि हे भद्रे ! पायस के ग्रहण से दूषित तेरा अशक्त भारवाहक मैं क्या करूँ ३९ आज मैं पुत्र के खेत में सब दिनभर मुख बाँधकर जोता गया और मारा गया इससे अतीव भूंखा हूँ ४० मेरे पुत्र ने वृथा श्राद्ध किया कि मुझको कष्ट हुआ। श्रीकृष्णजी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर ! इस प्रकार परस्पर कहते हुए माता पिता के वाक्य को उस समय सुन के ४१ उसी समय रात्रि में उन दोनों को अपना माता पिता जानकर भोजन दिया ४२ हे राजन् ! उस समय उसके पुत्र सुमति ने अपने माता पिता की यह अवस्था देख के वन में चलने को प्रस्थान किया ४३ इस विचार से वन को चला

मिच्छामि कष्टं वै मातापित्रोस्तु भारत ॥ तत्र गत्वा ज्ञान वृद्धान्ऋषीन्सप्तवनाश्रितान् ४४ प्रणिपत्याब्रवीद्वाक्यं हितञ्चैव तदा तयोः ॥ सुमतिरुवाच ॥ कथयध्वं ब्रह्मर्षयः प्रश्नमेतं समाहिताः ४५ केन कर्मविपाकेन पितरौ मे तपोधनाः ॥ इमामवस्थां सम्प्राप्तौ मोक्षेते पातकात्कथम् ४६ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ तव माता पुराविप्र स्वगृहे बालभावतः ॥ प्राप्तं ऋतुं विदित्वा तु सम्पर्कमकरोद्द्विज ४७ तेन कर्मविपाकेन शुनीयोनिमुपागता ॥ पितास्य स्पर्शदोषेण बलीबर्दो बभूव ह ४८ एतयोर्मुक्तिकामार्थं कुरु त्वमृषिपञ्चमीम् ॥ भार्यया सह विप्रेन्द्र

कि माता पिता के इस कष्ट के कारण को जाने, वहीं जाके ज्ञानवृद्ध वनवासी सात ऋषियों को देखा ४४ और प्रणाम करके अपने माता पिता के हितकारक वचन बोला कि हे ब्रह्मर्षे ! समाहित होके मेरे प्रश्न को कहिये ४५ हे तपोधन ! किस कर्म के विपाक से हमारे माता पिता इस अवस्था को प्राप्त हुए और इस पाप से किस प्रकार छूटें ४६ ऋषि लोग कहते हैं कि हे विप्र, द्विज ! पूर्व ही तुम्हारी माता ने अपने गृह में बालभाव से ऋतु को जानके भी सम्पूर्ण पात्रादि का स्पर्श किया ४७ उसीके फल से शुनीयोनि को यह प्राप्त हुई और स्पर्श के दोष से तुम्हारा पिता बलीबर्द (बैल) हुआ ४८ इन दोनों की मुक्तिकामना करके यत्नपूर्वक ऋषियों को पूजके स्त्रीसहित ऋषिपञ्चमी का व्रत

ऋषीन्सम्पूज्य यत्नतः ४९ आचरस्व व्रतं तत्र सप्तवर्ष द्विजोत्तम॥ अन्ते चोद्यापनं कुर्याद्वित्तशाठ्यविवर्जितः ५० शाकाहारस्तु कर्तव्यश्श्यामाकाहार एव वा॥ नीवारैर्वापि कर्तव्यं कृष्टपच्यं न भक्षयेत् ५१ प्राप्य भाद्रपदे मासि शुक्लपक्षेऽथ पञ्चमीम्॥ तस्यां मध्याह्न-समये नद्यादौ विमले जले ५२ कृत्वापामार्गवृक्षेण दन्तधावनमादितः ५३ आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजाः पशु-वसूनि च॥ ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वन्नो देहि वनस्पते ५४ सम्प्रार्थ्य तेन मन्त्रेण कुर्य्याद्वै दन्तधावनम्॥ मुख-दुर्गन्धिनाशाय रदनानां विशुद्धये ५५ ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्॥ अनेन दन्तान्संशोध्य

करो ४९ सात वर्ष तक इस व्रत को करके अन्त में वित्तशाठ्य-विवर्जित होकर उद्यापन करे ५० शाक और श्यामाक का आहार करे अथवा नीवार का आहार करे और जोतने से उत्पन्न अन्न न खाय ५१ भाद्रपदमास की शुक्लपञ्चमी में मध्याह्नसमय नद्यादिक के विमल जल में स्नान करे ५२ अपामार्ग के वृक्ष से दन्तधावन करे (मन्त्र)५३ हे वनस्पते! आयुर्बल, यश, तेज, प्रजा, पशु, वसु, ब्रह्मप्रज्ञा, मेधा हमको दो इस मन्त्र से दन्तधावन करे ५४ इस मन्त्र से प्रार्थना करके मुख दुर्गन्धि नाश और दाँतों की शुद्धि के लिये दन्तधावन करे ५५ गात्र की स्वच्छता के लिये हम दन्तधावन करते हैं इस प्रकार दाँतों को शोधकर मृत्तिका

स्नायान्मृत्स्नानपूर्वकम् ॥ तिलामलककल्केन केशान्संशोध्य यत्नतः ५६ परिधाय नवे शुद्धे वाससी सुसमाहितः पूजयस्व ऋषीन्दिव्यानरुन्धत्या समन्वितान् ५७ कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः ॥ जमदग्निर्वशिष्ठश्च साध्वी चैवाप्यरुन्धती ५८ मंत्रेणानेन सप्तर्षीन्पूजयेत्सुसमाहितः ॥ व्रतेन ऋषिपञ्चम्याः कृतेनैवं द्विजोत्तम ५९ ऋतुसम्पर्कजो दोषः क्षयं याति न संशयः ६० ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा सुमतिवाक्य परमंऋषिभाषितम् ॥ गृहमेत्य व्रतं चक्रे सभार्य्यः श्रद्धयान्वितः ६१ व्रतंतु ऋषिपञ्चम्यास्सर्वपापप्रणाशनम् ॥ कृत्वा सर्वं यथोक्तञ्च मातापित्रोः फलं ददौ

लगा के तिल और आँवला के कल्क से केशशोधन करके स्नान करे ५६ नवीन शुद्धवस्त्र पहिन के समाहित हो अरुन्धती सहित सप्तर्षियों की पूजा करो ५७ (पूजामन्त्रः) कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वशिष्ठ और साध्वी अरुन्धती ५८ इस मन्त्र से श्रद्धापूर्वक सप्तर्षियों की पूजा करे इस प्रकार ऋषिपञ्चमी के व्रत करने से ५९ ऋतुसम्पर्कज दोष नष्ट होता है ६० श्रीकृष्णजी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर ! उत्तम ऋषियों के वाक्य को सुनकर सुमति नाम ब्राह्मण ने अपने गृह में आकर श्रद्धापूर्वक अपनी स्त्री सहित व्रत को किया ६१ और सर्वपापप्रणाशन ऋषिपञ्चमी के व्रत को करके यथोक्त फल अपने माता पिता का दिया

६२व्रतपुण्यप्रभावेण माता तस्य श्वयोनितः॥ मुक्ता नृपति शार्दूल विमानवरसंस्थिता ६३दिव्याम्बरधरा भूत्वा गता स्वर्गञ्च भारत॥ पितापि स मृतोऽगच्छत्सुमतेः पशुयोनितः ६४ स्वर्गं प्राप्तो महाराज व्रतस्यास्य प्रभावतः॥ तस्य यज्जायते पुण्यं तच्छृणुष्व द्विजोत्तम ६५ सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्॥ सर्वदानेषु दत्तेषु तदेतद्व्रतपारणात् ६६ कुरुते या व्रतं नारी सा मवेत्सुखभोगिनी॥ रूपलावण्ययुक्ता च पुत्रपौत्रादिसंयुता ६७ इह लोके सदैव स्यात्परत्र च परांगतिम्॥ एतत्ते कथितं राजन् व्रतानामुत्तमं व्रतम् ६८ सर्वसंपत्प्रदं चैव नारीणां पापनाशनम्॥ धनं यशश्च

६२ व्रत के पुण्यप्रभाव से उसकी माता शुनी की योनि से छूटकर उत्तम विमान पर स्थित हो ६३ दिव्याम्बरधरा होकर स्वर्ग को प्राप्त हुई और सुमति का वह पिता मृतक हो पशुयोनि से मुक्त हुआ ६४ हे राजन्! इस व्रत के प्रभाव से वह स्वर्ग को प्राप्त हुआ। हे द्विजोत्तम! इस व्रत के करने से जो पुण्य होता है वह सुनो ६५ सम्पूर्ण व्रत, सर्व तीर्थ और सर्वदान देने में जो पुण्य होता है वह इस व्रत के पारण से होता है ६६ जो स्त्री इस व्रत को करती है वह सुखभोगिनी होती हुई रूपलावण्य से युक्त होकर पुत्र पौत्रादिकों से सम्पन्न होती है ६७ इस लोक में संपूर्ण भोग भोग के अन्त में परांगति को प्राप्त होती है। हे युधिष्ठिर! यह उत्तम व्रत हमने तुमसे कहा ६८ स्त्रियों को सम्पूर्ण सम्पत्ति

स्वर्गं च पुत्रानपि युधिष्ठिर ६९ पठतांःशृण्वतां वापि सर्वपापप्रणाशनम् ७० ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे ऋषिपञ्चमीव्रतकथा ॥

देनेवाला और सर्व्वपापप्रणाशन और धन, पुत्र, यश, स्वर्ग का देनेवाला है ६९ जो कोई इस कथा को पढ़े या सुने उसके सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त होते हैं ॥ ७० ॥

इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे ऋषिपञ्चमीव्रतकथा भाषाटीका सम्पूर्णा ॥

—:o:—

अथोद्यापनम् ॥ युधिष्ठिरजी कहते हैं कि हे श्रीकृष्ण ! इस व्रत का सम्पूर्ण फल देनेवाला उसका उद्यापन कैसा है और सुमति ब्राह्मण ने किस प्रकार किया सो कहो ॥ श्रीकृष्णजो कहते हैं कि पूर्व दिन समाहित हो एक भक्त व्रत करे और पवित्र स्थान में सर्वतोभद्र मण्डल बिषे विना छिद्र का ताम्र अथवा मिट्टी के कलश को वस्त्र से आच्छादित कण्ठदेश में सुशोभित पञ्चरत्न और फल, गन्ध, अक्षत, सुवर्णयुत और ताम्रपटल से आच्छादित-कर स्थापन करे और यवपूर्ण ताम्र अथवा मृण्मय पात्र सहित और वस्त्र से आच्छादित करके अष्टदल कमल लिखे और पल भर की या उसके आधे या उसके आधे से वित्तशाठ्य-विवर्जित शक्ति के अनुसार सुवर्ण की सप्तर्षियों की मूर्ति बनावे और फल, पुष्प से समन्वित पञ्चवर्ण वितान बाँध के मध्याह्न में श्रद्धासमन्वित हो इन ऋषियों की पूजा करे (मन्त्रः) "कश्यपो-ऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथगौतमः । जमदग्निर्वशिष्ठश्च साध्वी

चैवाप्यरुन्धती" हे राजेन्द्र ! इस मन्त्र से ऋषियों की पूजा करके रात्रि में पुराणश्रवणपूर्वक जागरण करे। और नित्यक्रिया करके तिल और घी से वैदिक अथवा पौराणिक मन्त्रों करके अष्टोत्तरसहस्र या अष्टोत्तरशत हवन करे। और फिर ऋषियों की पूजा करके व्रत करनेवाला सोने की अँगूठी, वस्त्र, कुण्डल और अमृत तुल्य भोजन करके पूजा करे और एक सवत्सा दूध देने-वाली गऊ दे और सात ऋत्विजों की पूजा करके कलश आदि सामग्री दे और सपत्नीक आचार्य को प्रणाम करके क्षमापन करावे और दीन वा अन्ध को तृप्त करके ब्राह्मणों को भोजन कराके सामग्री सहित सुवर्ण की मूर्त्ति आचार्य को दे और उनकी आज्ञा लेकर इष्ट बन्धुओं सहित भोजन करे ॥ श्रीकृष्णचंद्रजी राजा युधिष्ठिर से कहते हैं कि फलार्थियों के हेतु यह उद्यापन-विधि हमने कही। इस प्रकार जो कोई उद्यापन करे वह सम्पूर्ण पापों से छूटकर स्वर्ग को जाता है और स्त्रियाँ इस लोक में सुख भोग के पुत्र पौत्र समन्वित होती हैं और निष्पाप व सुभगा होकर अंत में अक्षयगति को प्राप्त होती हैं ॥ इति सोद्यापनं ऋषिपञ्चमीव्रतं समाप्तम् ॥

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लि०, लखनऊ में मुद्रित।

❋ हमारे अमूल्य प्रकाशन ❋

ब्रजविलास	६० – ००
सुखसागर	१५३ – ००
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम लेखक–श्री प्रतापसिंह	६८ – ००
शिवपुराण-भाषा सचित्र सजिल्द	१३५ – ००
भक्तिसागर चरणदास सजिल्द	८३ – ००
योगवाशिष्ठ संपूर्ण २ भागों में	३५० – ००
प्रेम सागर सचित्र सजिल्द	६५ – ००
रामायण तु० कृ० टीका पं० सूर्यदीन शुक्ल सचित्र सजिल्द	छप रही है।
रामायण तु० कृ० टीका पं० लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज सचित्र सजिल्द	१४० – ००
भक्तमाल नाभाजी सटीक सजिल्द	१३५ – ००
नरसिंह पुराण भाषा	४८ – ००

तेजकुमार बुकडिपो (प्राइवेट) लिमिटेड,
पोस्ट बाक्स ८५,
१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ–२२६००१